पिउजी तमे पेहेली कां प्रीतडी देखाडी, माहेंला मंदिरियो कां दीधां रे उघाडी।
पिउजी तमे अनेक रंगे रमाडी, हवे तो लई आसमाने भोम पछाडी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे धनी! पहले आपने क्यों इतना प्रेम दिखाया? हमारे मन के अन्दर के दरवाजे खोल दिए। पहले इतना आनन्द क्यों दिया और अब आसमान से पृथ्वी पर पटक दिया और मैं पिया-पिया करके पुकार करती हूं।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३६ ।।

बारहमासी का कलस

राग मलार

वाला मारा खटरुतना बारे मास, हां रे तेना अहनिस त्रण से ने साठ।
वाला तारी रोई रोई जोई में वाट, अम ऊपर एवडो कोप कीधा स्या माट।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! छः ऋतुओं के बारह महीने होते हैं। उनके तीन सौ साठ दिन और रातें होती हैं। जिनमें रो-रोकर आपके आने की राह देखी। हमसे इतने नाराज क्यों हो गए हैं। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा हुती रे मोटी तारी आस, जाण्यूं अमने मूकसे नहीं रे निरास।
ते तो तमे मोकल्यो तमारो खवास, तेणे आवी वछोड्या सांणसिए मास।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे आप पर पूरा विश्वास था कि आप हमें निराश करके नहीं छोड़ोगे। हे धनी! आपने अपने इस दूत ऊधव को भेजा जिसने हमारे शरीर से अपने वचनों की सांसी (संड़सी) से मांस खींचा है (आपको हमारे से जुदा करके ले गया)। मैं पिया-पिया की आवाज करके पुकारती रही।

रे वाला भलुं थयुं रे भ्रांतडी भागी, हांरे तारे संदेसडे अमे जागी।
हांरे एणे वचने रुदे आग लागी, हवे अमे जाण्यूं चोकस अमने त्यागी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! अच्छा हुआ कि हमारा भ्रम मिट गया और आपके सन्देश से हम सावचेत (सावधान) हो गए। आपके इन वचनों से हमारे हृदय में आग लगी है। हम जानती हैं कि आपने निश्चय ही हमें छोड़ दिया है और मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

रे ऊधव तूं भली रे वधामणी लाव्यो,अमारे काजे सूलीने सांणसियो लई आव्यो।
ऊधव तें तो अक्रूर पर इंडू रे चढाव्यो, ऊधव तें दुखडा घणूंज देखाड्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे ऊधव! तू अच्छा समाचार लेकर आया। हमारे लिए फांसी (शूली) के लिए संड़सी लेकर आया है। हे ऊधव! तुम्हारे सन्देश ने हमें बहुत कष्ट पहुंचाया। हे ऊधव! जिस समय अक्रूर कृष्ण को गोकुल से मथुरा ले गये उस समय हमें जो दुःख हुआ, उससे भी अधिक कष्ट देने वाला संदेश रूपी कलश हमारे ऊपर चढ़ाया (हमारे लिए प्राणघातक समाचार लाया)। मैं तो अपने श्याम को पिया-पिया करके पुकारती हूं।

रे ऊधवडा तूं एटलूं जाण निरधार, ऊधव तूंने नथी रे बीक करतार।
एणी मते पामीस नहीं तूं पार, तूं पण तारा धणीसो विछडीस आवार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे ऊधव! तुम इतना निश्चय जान लो कि तुम्हें परमात्मा का भी डर नहीं है। इस बुद्धि से तो पार नहीं पाएगा। तू भी अपने परमात्मा से इसी तरह से बिछुड़ेगा। मैं तो पिया-पिया करके पुकारती हूं।

रे ऊधव राख तूं कने तारूं डापण, पिउजी नहीं मूकूं अमें एवी पापण।
ताताने म दिए वली वली तापण, सखियो हवे समझ्या संदेसडे आपण।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे ऊधव! तू अपनी चतुराई अपने पास रख। मैं ऐसी पापिन नहीं कि अपने धनी को छोड़ दूं। तूने जलते को और जलाया है। हे सखियो! समझो यह हमारे लिए ऐसा सन्देशा लाए हैं। मैं तो पिया-पिया करके पुकार करती हूं।

ऊधव तारे डापणिए घणूं रे संतापी, रे मूरख तूंने ए मत कोंणे आपी।
अमें तूंने जाण्यो नहीं एवो पापी, तें तो नाख्या अमारा अंगडा कापी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ७ ।।

हे ऊधव! तेरी चतुराई से मैं बहुत दुःखी हुई। हे मूर्ख! यह बुद्धि तुझे किसने दी? हमें नहीं खबर थी कि तुम इतने पापी हो। तुमने तो (ऐसे वचन सुनाकर) हमारे अंग के टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं और मैं तो पिया-पिया की पुकार करती हूं।

सखियो हवे दुखडा के ऊपर कीजे, आपणो नंद कुंअर होय तो रीझे।
आपणी वातें जदूनो राय न भीजे, सखियो हवे ऊधवने संदेसा स्या दीजे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ८ ।।

हे सखियो! हम किस पर नाराज हों? हमारे नन्द कुमार होते तो अपनी बातों पर रीझते। अपनी बातों से यदुवंशियों के राजा कृष्ण को रहम नहीं आएगा। इसलिए ऊधव को सन्देश क्या देना? मैं तो पिया-पिया करके ही पुकारती रहूंगी।

सखियो हवे आपोपूं सहु कोई झालो, कान्हजी होय तो दोडी जईए चालो।
ए जदुराय नहीं रे गोपियोनों वहालो, सखियो हवे ऊधवने गुझडी कां आलो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ९ ।।

हे सखियो! तुम अपने आपको सम्भालो। यदि अपने वही कृष्ण होते तो हम दौड़कर चलते। यह यदुवंशियों का राजा कृष्ण अपना प्रीतम नहीं है। इसलिए अपनी बातें ऊधव को क्यों बताती हो? मैं तो अपने ही धनी की रट लगाए हूं और पिया-पिया कर रही हूं।

रे ऊधवडा अमारा धणी अम पासे, तारी मत लई जा रे तूं साथे।
अधखिण अलगो न थाए अमथी नाथ, विरह मांहें विलसूं वालैया संघात।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १० ।।

हे ऊधव! हमारे प्रीतम हमारे पास हैं तू अपना ज्ञान अपने साथ ले जा। हमारे प्रीतम हमसे एक पल के लिए जुदा नहीं होते। हम तो उनके वियोग में भी उनके साथ ही खेलती हैं और पिया-पिया करके पुकारती हैं।

रे ऊधवडा विरह मा नंदनो कुंअर, एणी अमकने खरी रे खबर।
विरह मा जोयो लाधे ततपर, ते ऊधव अमे भूलूं केम अवसर।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ११ ।।

हे ऊधव! हमें अच्छी तरह मालूम है कि इस विरह में भी नन्दकुमार हमारे ही बीच में हैं। इस विरह के बाद वह मुझे मिलेंगे। इसीलिए ऐसा अवसर हम क्यों भूलें? पिया-पिया की पुकार ही करते रहेंगे।

रे ऊधवडा अमारो धणी अममा गलियो, तमे आवतांते सांसो सर्वे टलियो।
ऊधव तारी वातें चित अमारो न चलियो, विरह वधारी ऊधव पाछो वलियो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १२ ।।

हे ऊधव! प्रीतम हमारे अन्दर समाए हैं। तुम्हारे आने से हमारे संशय मिट गए। हे ऊधव! तुम्हारी बातों से हमारा विश्वास टूटा नहीं। इस तरह गोपियों का विरह बढ़ाकर ऊधव वापस चले गए और मैं अपने धनी को पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

सखियो हवे घरडा सहुए संभारो, रखे कोई वालाजीने दोष देवरावो।
ए विरह मांहेना मांहेज मारो, सखियो एतो नहीं घर वार उघारो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १३ ।।

हे सखियो! अब तुम होश में आकर अपने तन को सम्भालो। किसी तरह से प्रीतम को दोष मत देना। दुःख को अपने मन में ही समेट लो। हे सखियो! अपने मन के दुःखों को किसी के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए बल्कि हम पिया-पिया पुकारते रहें।

सखियो तमे मूको रे बीजी सहु वात, आपण ऊपर निसंक पडी रे निघात।
दुखे केम मूकिए गोपीनो नाथ, हवे आपोपूं नाखो जेम रहे अख्यात।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १४ ।।

हे सखियो! तुम सब बातों को छोड़ दो। निश्चित ही अपने ऊपर यह कष्ट आ गया। इस दुःख में भी अपने प्राणनाथ को न छोड़ो, बल्कि अपने आपको कुर्बान कर दो जिससे तुम्हारा नाम हो जाए। मैं प्रीतम को याद कर पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

सखियो हवे विना घाय नाखो आप मारी, वालाजीना विरहनी वात संभारी।
वसेके वली राखो घर लोकाचारी, हवे एवी कठण कसोटी खमो नारी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १५ ।।

हे सखियो! वालाजी की बातों को याद कर बिना जाहिरी घाव के अपने अहंकार को नष्ट करो। फिर से सांसारिक दुनियादारी को निभाओ। इस दुःख के समय में कठिन कसौटी पर खरी उतरो और नित्य ही पिया-पिया की पुकार करो।

सखियो हवे विरहनी भारी रे उपाडो, ए अंग मायाना माया मांहें पछाडो।
ए विरह बीजा कहेने मा देखाडो, सखियो विना रखे कोणे बार उघाडो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १६ ।।

सखियो! अब विरह का बोझ सहन करो और माया का तन माया में लगा दो। यह मन के अन्दर की विरह की बातें किसी को मत बताओ। हे सखियो! यह भेद सखियों के अलावा किसी को मत बताओ और पल-पल पिया को याद करो।

सखियो मारो जीव जीवन मांहें भलियो, अमें माया ग्रही तोहे ते पल न टलियो।
ए वालो अम विना कोणे न कलियो, इंद्रावती कहे अमारो अमने मलियो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १७ ।।

हे सखियो! हमें प्राण प्रीतम मिल गए हैं। हमने माया को ग्रहण किया तो भी उन्होंने हमारा साथ नहीं छोड़ा। हमारे बिना धनी को किसी ने नहीं पहचाना। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हमारे प्रीतम तो हममें मिल गए हैं और मैं पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। २३० ।।

।। सम्पूर्ण प्रकरण ।। ९९ ।। चौपाई ।। २२०७ ।।

।। खटरुती सम्पूर्ण ।।